ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 285-288

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

गुजरात की वास्तुकला के संदर्भ में एक अध्ययन

1. कु0 वर्षा
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-18.12.2023, Revised-24.12.2023, Accepted-29.12.2023 E-mail: varsha.93sre@gmail.com

सारांशः इस अध्ययन का उद्देश्य गुजरात की वास्तु कला का अवलोकन करना है। गुजरात की वास्तुकला अपने आप में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। गुजरात की वास्तुकला में मंदिर–मस्जिद, मीनारे, किले, बावड़ी व अन्य प्राचीन और प्रसिद्ध वास्तु शिल्प के विषय में चर्चा की गई है। इसके अंतर्गत विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में से एक सिंधु सभ्यता का प्रसिद्ध स्थल लोथल, धोलावीरा, रानी की वाव, मारु गुर्जर शैली में निर्मित प्रसिद्ध मंदिर, झूलती मीनारे, सिदी सैयद मस्जिद आदि सम्मिलित है। प्रस्तावित शोध के द्वारा गुजरात में वास्तुकला निर्माण के प्राचीन पारंपरिक विकास के बारे में संयुक्त जानकारियां प्राप्त होगी।

कुंजीभूत शब्द– वास्तुकला, मंदिर–मस्जिद, मीनारे, किले, वास्तु शिल्प, धोलावीरा, रानी की वाव, मंदिर, पारंपरिक विकास।

गुजरात राज्य भारत के पश्चिमी तट पर स्थित है। इसकी तट रेखा देश में सबसे लंबी है जिसका अधिकांश भाग काठियावाड़ प्रायद्वीप पर स्थित है। इसे भारत के पश्चिमी भाग का गहना भी कहा जाता है। इसकी सीमा राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पाकिस्तान तथा दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव से दक्षिण तथा दक्षिण पश्चिम दोनों ओर अरब सागर से लगती है। गुजरात की राजधानी गांधीनगर है तथा इसका एक बड़ा शहर अहमदाबाद जो झूलती मीनार के लिए प्रसिद्ध है। इसका आधुनिक नाम गुजरात 'गुर्जर' देश संस्कृत शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ श्गुर्जरों की भूमिश है। गुर्जर एक जातीय समूह है जिसने गुजरात पर शासन किया था। गुजरात में एएसआई ने राष्ट्रीय महत्व के 203 स्मारकों को सूचीबद्ध किया है। गुजरात के प्रसिद्ध स्थापत्य शिल्प में आध्यात्मिक वास्तुकला शाही महल, हवेली, बावड़िया, तोरण, किले अन्य ऐतिहासिक स्थल सम्मिलित है।

गुजरात की वास्तुकला शैली अपनी पूर्णता और अलंकारिकता के लिए विख्यात है जो सोमनाथ, धुमली, मोढेरा, गिरनार जैसे मंदिरों व स्मारकों में संरक्षित है तथा अन्य प्रसिद्ध वास्तुशिल्पो में रानी की वाव, सिदी सैयद मस्जिद, अदालज बावड़ी, पावागढ़ किला, जामी मस्जिद, झूलता मीनार, पालीताना मंदिर, द्वारकाधीश मंदिर, हाथी सिंह जैन मंदिर, बाई हरीर वाव लक्ष्मी विलास पैलेस आदि है। इनमें सबसे प्राचीन सभ्यता लोथल और धोलावीरा है। लोथल में भारत का पहला बंदरगाह स्थापित किया गया था। गुजरात का प्राचीन इतिहास यहां के निवासियों का मुख्य रूप से मिश्र व बहरीन की व्यापारिक गतिविधियों से समृद्ध हुआ। उन्होंने उस युग में अपनी निर्माण शैली को अपनाया। 14 ई0 शताब्दी में गुजरात में विभिन्न स्थापत्य कलाओं के तीन कालखंड रहे हैं पहले चरण 1300–1458 तक रहा था जिसमें मंदिरों के विध्वंस का परंपरागत चरण और उसके बाद निर्माण सामग्री का पुनर्निर्माण था। 15वीं ईस्वी में अहमद शाह का काल था जहां इमारतो को सम्राट की अनुमति से डिजाइन किया गया था। तीसरा चरण 15वीं शताब्दी का दूसरा भाग था जिसमें स्मारक सुन्दर व कलात्मक बनाये गए।

गुजरात के प्रसिद्ध स्थापत्यशिल्प–

मोढेरा का सूर्य मंदिर– गुजरात राज्य के अंतर्गत मेहसाणा जिलें में स्थित सूर्य मंदिर सोलंकी राजा भीम प्रथम के काल में निर्मित किया गया था जो अपनी वास्तु शैली और उन पर की गई शिल्प.तियों के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक माना जाता है। यह मंदिर सूर्य देवता को समर्पित है।

नवलखा मंदिर– गुजरात के घुमली गांव में स्थित सूर्य को समर्पित नवलखा मंदिर भारत की समृद्ध, सांस्.तिक और स्थापत्य विरासत का प्राचीन अद्भुत प्रमाण है। नवलखा मंदिर का निर्माण जेठवा शासको के द्वारा करवाया गया था। नवलखा मंदिर गुजरात के सबसे प्राचीन सूर्य मंदिर के रूप में प्रसिद्ध है और यह स्थापत्य शैली का एक अनूठा मिश्रण प्रदर्शित करता है जिसमें सोलंकी शैली और मारु गुर्जर वास्तु कला के तत्व शामिल है। नवलखा मंदिर का निर्माण नौ लाख की लागत से किया गया था जिसके कारण इस मंदिर को नवलखा मंदिर कहा जाता है। गुजरात के सभी मंदिरों में इसका आधार सबसे बड़ा है। यह प्राचीन मंदिर अपनी जटिल नक्काशी और अलं.त डिजाइन के साथ सोलंकी वास्तुकला का एक उल्लेखनीय उद्हारण है। यह वास्तुकला शैली के उत्.ष्ट प्रमाणों में से एक माना जाता है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

सोमनाथ महादेव मंदिर– सोमनाथ का तात्पर्य चंद्रमा को धारण करने वाले शिव से है, अतः शिवलिंग के साथ–साथ यहां अन्य देवी देवताओं जैसे गणेश, कामदेव, कार्तिकेय आदि देवताओं की मूर्तियां भी सुशोभित है। गुजरात का सोमनाथ मंदिर जहां असंख्य मूर्तियां उत्क्रींण है जिसे कई बार नष्ट किया गया और कई बार पुनर्निमित किया गया। कुमारपाल ने १२ वी सदी के उत्तरार्ध में इसका पुनर्निर्माण किया था। यह मंदिर आधुनिक काल में पुनर्निमित किया गया था।

रानी की वाव– भारत के गुजरात राज्य के पाटन शहर में स्थित रानी की बावड़ी सरस्वती नदी के तट पर स्थित है। यह 11वीं शताब्दी ईस्वी में राजा भीम प्रथम के स्मारक के रूप में रानी उदयमती ने बनवाया था। यह एएसआई भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा निर्मित राष्ट्रीय महत्व का स्मारक है। रानी की वाव एक सात मंजिला बावड़ी है। इसे पानी की पवित्रता को उजागर करने वाले एक उल्टे मंदिर के रूप में डिजाइन किया गया था। इसे उच्च कलात्मक गुणवत्ता की मूर्तिकला पैनलो के साथ सीढ़ियों के सात स्तरों में विभाजित किया गया है। 500 से अधिक प्रमुख मूर्तियां और 1000 से अधिक छोटी मूर्तियां धार्मिक, पौराणिक और धर्मनिरपेक्ष छवियों को जोड़ती है। इसका निर्माण चालुक्य वंश के शासन के समय किया गया था। इस प्रकार यह मारु गुर्जर वास्तु कला शैली को प्रतिबिंबित कर रही थी। इसे बावड़ी निर्माण में कारीगरों की क्षमता की ऊंचाई के रूप में बनाया गया, साथ ही इस जटिल तकनीक, विस्तार और अनुपात की महान सौंदर्यता को दर्शाता है। बावड़ी में 212 खंबे हैं और प्रवेश द्वार पूर्व में स्थित है जबकि कुआं सबसे पश्चिमी छोर पर स्थित है जिसका व्यास 10 मीटर और गहराई 30 मीटर है जो गहरे गोलाकार कुएं का निर्माण करता है।

झूलती मीनार– हिलती मीनारे सीदी बशीर मस्जिद का हिस्सा है। इसे सुल्तान महमूद बेगड़ा के शासनकाल में 1452 में बनवाया। अहमदाबाद में सबसे ऊंची मीनार अब अहमदाबाद रेलवे जंक्शन के उत्तर में स्थित है। हिलती मीनारे लगभग तीन मंजिल ऊंची है जो नाकशीदार बालकानियों के साथ बनी है इनके हिलने के कारण इन्हें हिलती मीनार या झूलता मीनार कहा जाता है। मीनारों की खासियत यह है कि किसी भी मीनार को हल्के से हिलाने पर कुछ सेकेंड के बाद दूसरी मीनारे कंपन करने लगती है जबकि कनेक्टिंग मार्ग किसी भी हलचल या कंपन को संचारित नहीं करता है। यह आज भी एक अनसुलझा रहस्य है, पर मीनारों के छोटे–छोटे विवरण पत्थर पर नक्काशी विधि का उपयोग करके भरे गए है। इस उत्कृष्ट कृति के बाद कई अन्य मीनारों का भी निर्माण किया गया।

सीदी सैय्यद मस्जिद– अहमदाबाद में लाल दरवाजा के पास स्थित सीदी सैय्यद मस्जिद शहर और दुनिया की सबसे प्रसिद्ध मस्जिदों में से एक है। सीदी सैय्यद मस्जिद का निर्माण 1572 ईस्वी में किया गया था। यह पूरी तरह से एक विशाल पत्थर से बनाया गया, हालांकि मस्जिद अपनी जालियों के लिए सबसे प्रसिद्ध है। जालिया मुख्यत पीछे की ओर या किनारो की खिड़कियों में पाई जाती है। मस्जिद की पिछली दीवार पर आठ मेहराबदार खिड़कियां है, सभी खिड़कियां पत्थर पर बारीक नक्काशीदार जालियों से भरी है। जालीदार खिड़कियों को श्जालिशश कहा जाता है। पीछे की दीवार ज्यामितीय डिजाइनों में चौकोर पत्थर के छेद वाले पैंनलों से भरी हुई है। केंद्रीय गलियारे के दोनों किनारो पर जालीदार पत्थर के स्लैब है जिन पर आपस में गुथे हुए पेड़ों और पत्तों और ताड़ की आ. ति के डिजाइन बने है। यह जटिल नक्काशीदार जालीदार पत्थर की खिड़की सीदी सैय्यद जाली है जो अहमदाबाद शहर का अनौपचारिक प्रतीक है। मस्जिद की केंद्रीय खिड़की का मेहराब जहां से एक और जटिल जाली देखने की उम्मीद की जा सकती है। उसकी दीवार पत्थर से बनाई गई है। प्राचीन वास्तुकला के सर्वोत्तम नमूनों में से एक इस मस्जिद के पत्थर पर बहुत विस्तृत नक्काशी की गई है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

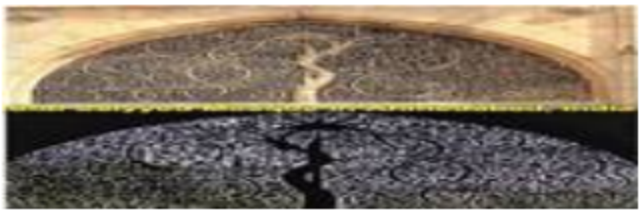

लोथल– इसे भारत के सबसे प्राचीन बंदरगाह शहर के रूप में जाना जाता है, सिंधु घाटी सभ्यता के दक्षिण शहरों में स्थित लोथल 4500 साल पुराना शहर है। यह दुनिया की सबसे प्रारंभिक गोदी थी, जो शहर को सिंध में हड़प्पा शहर और सौराष्ट्र प्रायद्वीप के बीच व्यापार मार्ग पर साबरमती नदी के एक प्राचीन मार्ग से जोड़ती थी। जब आसपास का कच्छ रेगिस्तान अरब सागर का हिस्सा था। आभूषणों, रत्न और मोतियों का व्यापार इस मार्ग से होता था। लोथल का एक हाथी दांत पैमाना सिंधु सभ्यता में सबसे छोटा विभाजन है। पुरातत्ववेत्ताओं ने खोजे सोने के पेन्डेन्ट, टेराकोटा और मिट्टी के बर्तनों की जली हुई राख मोती और अन्य चिन्ह। पशु पूजा भी हड़प्पा सभ्यता उसके धर्म की विविधता का प्रतीक है।

20वीं शताब्दी में शासकीय वास्तुकला का स्थान आधुनिक वास्तुकला ने ले लिया। गुजरात की राजधानी अहमदाबाद की आधुनिक वास्तुकला के विषय में चर्चा करते समय कोई भी आधुनिक वास्तु कला के जनक बी.वी. दोशी के कार्यों का उल्लेख किये बिना नहीं रह सकता। अहमदाबाद के अलावा गुजरात के सूरत, बड़ौदा और राजकोट में भी वास्तुशिल्प जैसे सूरत महल, राजकोट में जुबली गार्डन, बड़ोदरा में लक्ष्मी विलास पैलेस चंपानेर पावागढ़ कुछ महत्वपूर्ण वास्तु शिल्प है, इसके पश्चात आधुनिक वास्तुकला मशीनरी श्रमिकों के अध्ययन और तकनीक के साथ उन्नत हो गई। ऐतिहासिक इमारत के अलावा आधुनिक वास्तुकला भी अहमदाबाद में विकसित हुई ली कार्बूजिए, चार्ल्स कोरिया जैसे वस्तुकरो द्वारा अहमदाबाद में बनाई गई प्रसिद्ध इमारतें है। आधुनिक निर्माण के लिए वास्तुकार बी.वी. दोशी का नाम बहुत प्रसिद्ध है। वास्तुकार विमल पटेल द्वारा साबरमती रिवर फ्रंट अहमदाबाद में आधुनिक वास्तुकला का एक प्रसिद्ध उदाहरण है। साबरमती नदी के किनारे निर्मित सरदार वल्लभभाई पटेल की स्टैच्यू ऑफ यूनिटी नवीन वास्तुकला का बेहतरीन उदाहरण है। यह सबसे ऊंची प्रतिमा गुजरात के केवड़िया में स्थित है, जिसकी ऊंचाई 182 मीटर 597 फिट है जो सरदार सरोवर बांध के सामने नर्मदा नदी पर स्थित है।

निष्कर्ष– गुजरात की भव्य वास्तु कला के विषय में यह कहा जा सकता है कि भवन निर्माण के सभी वास्तु शिल्प का निर्माण लोगों और संस्ति की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाता रहा है। तकनीकी विकास के साथ–साथ वास्तुकला शैली बदल गई। हालांकि यहां के प्रसिद्ध वास्तुशिल्प में मंदिर वास्तुकला न केवल आध्यात्मिकता को प्रेरित करता है, बल्कि अपनी जटिल नक्काशी के लिए भी प्रसिद्ध है। प्राचीन समय में सामग्री का लचीलापन कलाकारों की कुशलता और इंजीनियरों की दक्षता पर संदेह नहीं किया जा सकता है। उनका कार्य आज भी ठोस है और इतिहास पर अपनी छाप छोड़ रहा है, साथ ही जलवायु और आध्यात्मिक भावनाओं ने भी प्रत्येक युग के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाई थी। गुजरात में अद्भुत वास्तुशिल्प, इमारतों व् मंदिरो का निर्माण होता रहा है, जो बहुत भव्य रूप में है, यह वास्तुशिल्प आज भी आश्चर्य का विषय रहे है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मीनाक्षी काशीवाल भारती, भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला, पृष्ठ संख्या 260.
2. Gujarat self study history https://selfstudyhistory.com/2020/10/03/provincial_architecture_gujrat/
3. Evolving scenario of architecture in Gujarat: an overview/ Az south Asia https://architexturez.net/doc/az-cf-21243
4. A study of architecture in Gujarat from past to present ISSN No. 0974-035X https://hrdc.gujratuniversity.ac.in/uploads/egeneraldetails/30/1045/35.pdf
5. 17 historical place in Gujarat that uncover a legendary past https://traveltriangle.com/blog/historical.place-in-gujarat
6. Maru Gurjara architecture_wikipedia https://en.m.wikipedia.org/wiki/m%c4%81ru-gurjar_architecture
7. Rani Ki Vav (the queen's stepwell) at patan, Gujarat https://whc.unesco.org/en/list/922/
8. Architecture of Gujarat- https://en.m.wikipedia.org/wiki/architecure_of_gujarat

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

9. historical city of Ahamdabad UNESCO world heritage centre https://whc.unesco.org/in/list/1551/
10. Gujarat encyclopedia Britannica. https://www.britannica.com/place/gujarat
11. Sidi Sayyed mosque Wikipedia https://en.wikipedia.org./wiki/sidi_sayyed-mosque
12. Most historical place to visit in Gujarat https://www.gujaratexpert.com/historical.places_ingujrat/
13. Sun temple, Modhera-wikipedia https://en.wikipedia.org/wiki/Sun-Temple_Modera
14. Gujarat Provincial Architecture www.slideshare.net/mobile/Shaaz_bazmi/Gujarat-provincial-architecture
15. Lothal Wikipedia https://en-wikipedia.org/wiki/lothal

*****